06/03/2017; Issue 063 ₹ 1

पं ग वा ड़ी मा सि क प त्रि का

तुबारि

www.pangi.in

पंगवाड़ी भाषा विकास वेबसाईट
पंगवाड़ी, हिन्दी त अंग्रेजी टाई भाषा अन्तर असी।

तुबारि संपादकीय टीम

♦अस इ उम्मिद करुं लगो से कि एण बाड़े दिन अन्तर सुआ मेहणु इस कम अन्तर सहयोग कते।

♦इस तुबारि मासिक पत्रिका समाचार पत्र एक्ट अन्तर रिजिष्ट्रि नेई भो। सिर्फ पांगि घाटि अन्तर पढ़ूं जे इ पत्रिका शुरु किओ सि।

♦तुबारि यक अवाणिज्यिक पत्रिका भो।

♦तुबारि पत्रिका कोइ मेहणु, जनजाति, त संस्कृति गल्लि कढ़ेण जे नेई छपाण लगो। अगर कोइ ईं सोचता बि त अस जिम्मेबार नेई।

♦छपाणे पेहले सोभ आर्टिकल दुई टाई पांगेई मेहणु हरालो असे। इ त खुलि बोक असि कि पेहलि बार पांगवाड़ि लिखणे सुआ मुशकिल भुन्ति त गलति बि भुन्ति। अगर कोइ लिखणे गलति असि त असि जे जरूर बोले। त अस तसे होरे संस्करण पुठ ठीक करणे कोशिश कते।

♦आर्टिकल्स ना मिएल, या घाटि मेहणु के मदद ना मिएल त तुबारि पत्रिका कदि बि बंद भुई सकति।

♦कोइ चिज छपां सि या नेई छपां जे तुबारि संपादकीय टीमे पुरा अधिकार असा।

♦अस किलाड़ केन्द्रीय पुस्तकालय, त बजार राखे ठेके भैड़ हरिरामे दुकान अन्तर तुबारि ड्रॉप बॉक्स पुठ बि अपुं सझाव ओर अर्टिक्लस रखुं जे सुविधा किओ असि।

♦अस सोभि पांगि मेहणु जे हात जोड़ कई निवेदन कते कि, तुस बि कोइ अछा अर्टिक्ल, पुराणि या नौइं कथा, कहावत, कविता, त नौवे घीत (पागवाड़ी अन्तर) लिख कइ छपां जे हेंन्नदे दिए।

तुबारि संपादकीय टीम
9418431531
9418429574
9418329200
9418411199
9418411599

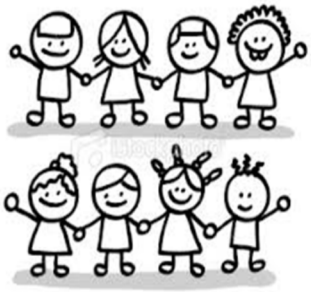

'तकड़े असे ना'

तुबारि संपादकीय टीमे कनारा सोभि तुबारि पढ़णे बाड़ी, लेखक त दुकानदारी के मदत जे धन्यवाद।

'पंगेई सोभि मेहणु जे जकारु बधे!

नजरिया — चम्पा ठाकुर

न धरती बोड़ि, पर मेहणु फिर दुई केआं चोउर भुई गे। कुवा जमाणणे चक्कर अन्तर, सुआ बोडा परिवार भोईगा। भगवान सूरी सूरी कई, जिखेईं कुवा यक जम गा। कुवा छाति जोई लाई कई, ईं सोचु कि सोब सपने पुरे भोई गे। गभुरु पढ़ाणे बी चिंता, त रोटि झणे बी नसीब न भुए। जिन्दगी अन्तर गरीबी एई गइ, त कष्ट बी सुआ भोई गए। बारि जिखेंई पढ़ाणे आई, त कुई के इच्छा दबाई छई। कुवा जिखेंई लघा स्कूल, ईं लगु कि सोब सपने पुरिगे। कुई के इच्छा दवाई कई, ईं लगु सुआ खुश भुई गे। कइ छड़ा तेन्के बियाह मठड़ियारि, जी तेन्हि पुठ एहसान किआ। कुवा बी तोउं तक्कर पढ़ि कई, झटपट सरकारे नौखर बणि गा। कर्जा कर कई बियाह किआ, त जुएली घिन कई घेईगा। तिखेंई टुटि कई दुखि भुए, त हंठि फिरि बी न सके। कुवाए न भो गिहे बारिस, कुई बी भो गिहे शान। यक कुवा पढ़ियाल त यके मेहणु पढ़ा, कुई पढ़णे बोलिये पढ़िगे केहि खानदान। कुई कुवा अन्तर न लोता भेद भो, बस सोब लोते पढ़ो। बोते कि, अब बन्न करे कुई अपमान करण। कोइए चाह अन्तर कुई जे शराप न दिए, जिल्हणु केआं इ संसार भुआ तेन्हि जे दिये अशूश।

जिन्दगी की भो — शुभम

यक मेहणु पुछु कि जिन्दगी कि भो? काणे बोलु कि हेरणु ई जिन्दगी भो। लटे बोलु हठुंणु जिन्दगी भो। प्यार करणे बाड़े बोलु प्यार करुण जिन्दगी भो। न उमीदे बोलु उमीद रखणि जिन्दगी भो। अनाहरे बोलु टागड़ियारे जिन्दगी भो। दुखिए बोलु सुखी भुण जिन्दगी भो। अकेले बोलु साथ बिशुणु जिन्दगी भो। रोलणे बोलु हसणु जिन्दगी भो। गरीबे बोलु अमीर बणुण जिन्दगी भो। झूठे बोलु सचाई जिन्दगी भो। अगर कऊं मोउं कैआं पुछियाल कि जिन्दगी कि भो त अउं बोता..... बड़ाई कइ गवाण त गवोइ कइ बणाणे जिन्दगी भो।

थमे मीएखि

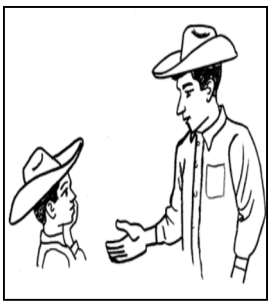

पुराणे जमाने यक बोक असी। यक ग्रां यक कुवा थिआ। से सुआ लेहरोठा थिआ। तेस धिक-धिक बोकि पुठ बि सुआ लेहर एन्तीथ, त मेहणु जे भलु-बुरु बोलुण लग घेन्तथ। तसे एस आदती बेलिए परीशान भोइ कइ यक रोज तसे बोउए तसे धे यक बैग भरी मिएखि दती त बोलु, 'अब जपल बि तोउ लेहर एइएल त इस बेग अन्तरा मिएखि कढ़ त ओस थम अन्तर डूबा।

पहेलकण रोज तेस कुवा चढ़ि लिंगि लेहर आइ त तेन अतरे लिंगि मिएखि थम अन्तर डुबेइ छइ। से रोज के तिहाणि कतथ, जीं लेहर एन्तीथ तीं से मिएखि डूबतथ। पर मठे-मठे मिएखि डूबाण घटती गइ। तेस लगुण लगु कि मिएखि डूबण जे अति मेहनत करण केआं त खरु असु कि अउं अपु लेहर काबू करण शिचुण। पता किछ इ हफ्ती अन्तर तेन अपु लेहर सुआ काबू कइ छइ। त फि यक रोज ईं बि आ कि तेन अपु लेहर मुकइ छइ।

जपल तेन अपु बोउ जे ए बोक बतइ त तन्हि फि तसे धे यक कम दी छऊं। तन्हि बोलु, 'अब हरेक तेस-तेस रोज जेस-जेस रोज तोउ यक लिंगि बि लेहर न एईएल त इस थम जोइया यक-यक मिएखि बहर किढ़ छइ।' कोइए तहाणि किउ, तउं सुआ रोजे बाद से दन बि एइ गा जपल कोइए थम अन्तरा अखिरी मिएखि बि भीं कीढ छइ, त खुश भोइ कइ अपु बोउ जे ए बोक बतइ।

तपल बोउए कोइए हथ टइ कइ से तेस थम केई निआ, त बोलु, 'कोइया, तेई सुआ अबल कम किउ, पर कि तु थम अन्तर कियो अन्हि छिन्डी हेरण लगो असा ना? अब त ए थम कदि बि तीं न बण सकता, जीं ए पहेले थिआ। जपल तु लेहरिए पुठ किछ बोता त से बोके बि इहाणि समाड़ी बिशो तेस मेहणु मन अन्तर घा कते।' तउं त होर फेरी लेहर कढण केआं पहेलाइ सोची दे कि तु एस थम अन्तर हउ मिएखि डूबाण चहंता ना?

मजाक

मजाक कसेरी कपले बि ना बणाण, दिल कसेरी कपले बि ना दुखाण। सुआ नजुक भुन्ते रिश्ते तन्हि कपले बि दुख ना देण। कसे गरीब मेहणु मजबूरी पुठ कपले बि हसुण नऊ। हसाड़ करणे बि यक हद भुन्ती, से हद कदि लंघीण नऊ। हसाड़ करणे मतलब हस-खेल कइ टेम पास करण, हसाड़े बेलिए मन-मुटाव ना करण।

दुइ मेहणु झगड़ी लगो थिए..... बबीता

ADVERTISEMENT/ BEST WISHES FOR MARRIAGES, BIRTHDAYS, RETIREMENTS Etc. Please 9418429574

सोभि पंगेई मेहणु के छने -अरे कते हियुंत मेहना लगो असा त सुआ ठन्यारी असी। तिहार बि लगो असे त सुआ अराख न पिए। अपु कुई-चीड़ी त सकि नति जोइ तिहार मनाए। सुआ अराख पी कइ अपु सेहद खराब न करें।